महाराजा सीकर को यह सूचना हेड मास्टर से मिली। उन्होंने दीनदयाल जी को पुरस्कार हेतु बुलाया।
तुम्हारे माता–पिता क्या करते हैं?
मेरे माता–पिता नहीं हैं। मेरे मामा–मामी ही मुझे पढ़ा रहे हैं। वे ही मेरे माता पिता हैं।
तुम्हें पुरस्कार में क्या चाहिए?
आपका आर्शीवाद।
तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। जितना चाहे पढ़ो। तुम्हें छात्रवृत्ति, स्वर्णपदक के साथ साथ प्रवेश व पुस्तकों का व्यय दिया जाएगा।

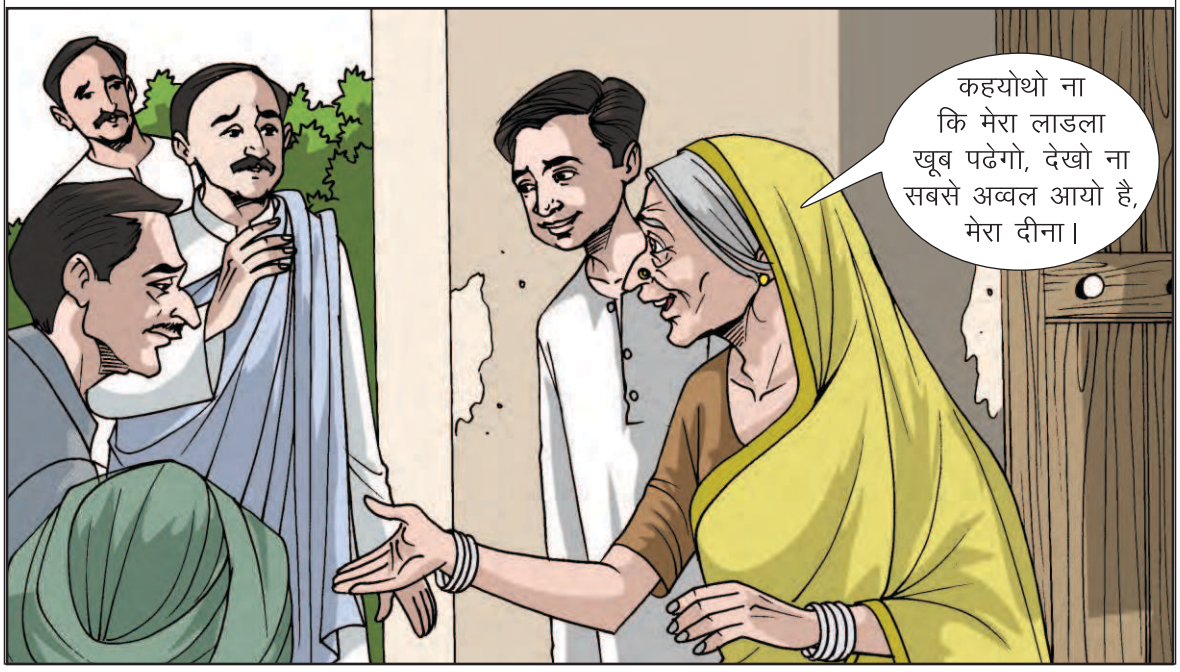
कहयोथो ना कि मेरा लाडला खूब पढेगो, देखो ना सबसे अव्वल आयो है, मेरा दीना।